संदेश

ऐसे व्यक्तित्व विरले होते हैं, जिनका संस्पर्श हमारे जीवन को उदात्तता दे। स्वर्गीय नानाजी देशमुख एक ऐसे ही व्यक्तित्व थे। उन्होंने न केवल अपना जीवन महती आदर्शों को समर्पित किया वरन् समाज को भी आदर्शों के मार्ग पर चलने की एक दिशा दी।

आज के समय में यह कल्पना कठिन है कि कैसे नानाजी सहजता से उदात्त मानवमूल्यों को जीते थे। उनके लिए मूल्याधारित जीवन उस भारतीय संस्कृति का अवदान था, जिसे उन्होंने सहजता से ग्रहण किया था। उन्हें भारतीय सभ्यता की गहरी समझ थी।

स्व. नानाजी देशमुख राष्ट्रप्रेम, जनसेवा और विनम्रता का अद्‌भुत संगम थे। उनके द्वारा गोंडा उत्तरप्रदेश, चित्रकूट, मध्यप्रदेश और दीनदयाल शोध संस्थान, नई दिल्ली में जिन प्रकल्पों की स्थापना की गई है, वे विश्व में कहीं भी नहीं हैं। उन्होंने भारतीयता के मूल्यों पर आधारित उन विचारों को मूर्तरूप दिया, जो भविष्य में समूची मानवता का मार्गदर्शन करेंगे। पारस्परिक सद्‌भाव से विकास का यह विचार, स्पर्धा के आधुनिक समय में एक नया विकल्प रखता है।

आदरणीय स्वर्गीय नानाजी देशमुख ने राजनीति में मूल्यों की स्थापना के लिये अनवरत संघर्ष किया। अपने जीवन को मिसाल बनाते हुए, आपने सत्ता के पदों को जिस तरह त्यागा, वह आज के युग में दुर्लभ है।

लिप्सा और वस्तुओं की निरंतर इच्छाओं के इस युग में नानाजी का त्याग विलक्षण लगता है लेकिन यह उनका सहज जीवन दर्शन था। त्यागी, तपस्वी या ऋषि जैसे विशेषणों से परे जाकर वे निरंतर मानव कर्म की, उच्चतर लक्ष्यों की साधना करते रहे।

उनके जीवन को न शब्दों में समेटा जा सकता है, न व्यक्त। लेकिन आने वाली पीढ़ी के लिये ऐसे जीवन से परिचय आवश्यक है।

जनसम्पर्क विभाग द्वारा स्व. नानाजी देशमुख पर केन्द्रित प्रकाशन किया जाना स्तुत्य है।

मुझे विश्वास है कि यह प्रकाशन सामान्यजन के जीवन को एक नई दृष्टि देगा और उन्हें जीवन के उदात मूल्यों से जोड़ेगा।

(शिवराज सिंह चौहान)
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश